बी०ए० भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
'आधुनिक काल'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग, डी.के. कॉलेज
डुमरॉव बक्सर

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र -

सहसान बरसन सो सुन्यो जो सपने नहिं कान
सो जय आरज शब्द।

फरकि उठी सबकी भुजा, खरकि उठी तरवार।
क्यों आपुहि ऊँचे भए आर्य मोछ के बार॥

हाय! वहै भारत-भुव भारी।
सब ही विधि सों भई दुखारी॥
हाय चित्तौर! निलज तू भारी।
अजहुँ खरो भारतहि मँझारी॥

निज भाषा उन्नत अहै, सब उन्नति कै मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान कै मिटै न हिय कै सूल॥

कहाँ करुणानिधि केशव सोए?
जागत नाहिं अनेक जतन करि भारतवासी रोए॥

मेरे तो साधन एक ही है, जग नन्द लला वृषभानु
दुलारी॥

पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियाँ दुखियाँ
नहिं मानती हैं।

सिसुताई अजौं न गई तन ते,
तऊ जोबन जोति बटोरे लगी।

आजु लौं न मिले तो कहा हम तो
तुमरे सब भाँति कहावैं।
प्यारे जू है जग की यह
रीति बिदा की समैं सब कण्ठ लगावैं।

मुँह जब लागै, तब नहिं छूटे,
जाति मान धन सब कुछ लूटे।
पागल करि मोहि करे खराब,
क्यों सखि सज्जन नहीं सराब॥

है है उर्दू हाय हाय!
कहाँ सिधारी हाय! हाय!

सभा में दोस्तों बन्दर की आमद है,
गधे और फूलों के अफसर की आमद आमद है॥

भीतर-भीतर सब रस चूसै,
हँस हँस कै तन मन धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज
क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेज॥

'रसा' महवे फसाहत दोस्त क्या दुश्मन भी हैं सारे।
जमाने में तेरे तर्जे-सुखन की यादगारी है।

श्री राधा माधव युगल चरण
रस का अपने को मस्त बना।
पी प्याला भर भरकर कुछ
इस मैं का भी देख मजा।।

रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

रहै क्यों एक म्यान असि दोय।
जिन नैनन में हरि-रस
छायो तेहि क्यों भावै कोय।।

सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी विभाग डी.के.कॉलेज
डुमरॉव बक्सर
(बिहार)